हिंदी - स्पर्श भाग-2

कक्षा – दसवीं

गद्य - पाठ 1, बड़े भाई साहब

(रेखाचित्रीय उपन्यास)

दिल्ली पब्लिक स्कूल , गुड़गाँव

(सीबीएसई से संबद्ध)

"असाधारण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए **सबका सहयोग** हम में उच्च कोटि का ईंधन तैयार करता है, और हमें सफलता की उड़ान भरने के लिए प्रेरित करता है।"

प्रशिक्षण और सलाहकार	श्री संदीप सेठी शिक्षाविद, परामर्श निदेशक- शिक्षा कार्यक्रम एम.एस.एम.एस.संग्रहालय, जयपुर
समन्वयक	श्रीमती अदिति मिसरा निदेशक प्राचार्या - दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुड़गाँव श्रीमती सपना धवन डीन (छात्र कल्याण) - दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुड़गाँव
विषय विशेषज्ञ	श्रीमती निशि धंजल (विषय संदर्शिका) पी.जी.टी. हिंदी विभाग श्रीमती अंजु भटनागर, टी.जी.टी. हिंदी विभाग श्रीमती शशि प्रभा मिश्रा, टी.जी.टी. हिंदी विभाग श्रीमती नीलम शर्मा, टी.जी.टी. हिंदी विभाग
आवरण पृष्ठ	श्रीमती मधुमिता नंदी (विभागाध्यक्षा) पी.जी.टी. कला विभाग
कला	श्री सुशांत चटर्जी, पी.जी.टी. कला विभाग
तकनीकी सहयोग	श्रीमती ज्योति खुराना, पी.जी.टी. कंप्यूटर साइंस विभाग

1057CH10

कॉमिक बुक और अतिरिक्त परस्पर संवादात्मक डिजिटल सामग्री तक पहुँचने के लिए, अपने एंड्रॉइड स्मार्टफोन या टैबलेट पर गूगल प्ले स्टोर से DIKSHA ऐप डाउनलोड करें और DIKSHA ऐप का उपयोग करके QR कोड को स्कैन करें।।

DIKSHA

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	अधिगम	5
2.	दृश्य आरेखण (स्टोरी बोर्ड)	6
3.	पात्र-परिचय	7
4.	चरित्रगत विशेषताएँ	8
5.	कहानी (वर्तमान काल)	9
6.	गतिविधियाँ	16
7.	कहानी (बड़े भाई साहब)	17
8.	वर्ग पहेली	36
9.	प्रश्नावली	38
10.	शब्दावली	42
11.	ग्रंथ-सूची	43
12.	अभिस्वीकृति	44

अस्वीकरण

दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुड़गाँव, सेक्टर-45 द्वारा कृत यह उपन्यास केवल काल्पनिक है। यह उपन्यास युवा शिक्षार्थियों को प्रेरित करने, उनकी रुचि को जागृत करने और पाठ की बेहतर समझ प्रदान करने के लिए बनाया गया है। इसका अर्थ है कि यह उपन्यास केवल पूरक मात्र है, इसका उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित पाठ की जानकारी को बदलना नहीं है। इस ग्राफिक उपन्यास के पात्र काल्पनिक हैं और किसी भी नाम, पात्र और घटना से उनका मिलना मात्र संयोग है।

आमुख

' बड़े भाई साहब' कहानी प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद द्वारा रचित है। इस कहानी को आज के युग से जोड़ने के लिए एक आधुनिक परिवार का सहारा लिया गया है। पाठ ' बड़े भाई साहब' में निहित संदेश माँ तथा दोनों बच्चों की बातचीत के द्वारा आज के विद्‌यार्थीवर्ग तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

प्रेमचंद की कहानियाँ हमेशा शिक्षाप्रद रही हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से किसी न किसी समस्या पर प्रहार किया है। 'बड़े भाई साहब' समाज में समाप्त हो रहे कर्तव्यों के एहसास को दोबारा जीवित करने का प्रयास मात्र है।

' बड़े भाई साहब' कहानी में प्रेमचंद ने बाल-मनोविज्ञान का विश्लेषण किया है। यदि बच्चों को केवल उपदेश दिया जाए तो वह उनकी उम्र के विरुद्ध होता है क्योंकि उनकी बालमन की इच्छाओं को दबा दिया जाता है। मन मारकर अच्छा बनने की कोशिश हमारे स्वाभाविक जीवन में गतिरोध उत्पन्न कर देता है इसलिए बड़े भाई साहब, छोटे भाई के मार्गदर्शन के अंतर्गत अपना विकास नहीं कर पाते हैं। इस कहानी में बड़े भाई साहब अपने कर्तव्य को सँभालते हुए अपने भाई के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर रहे हैं। उनकी उम्र इतनी नहीं है जितनी उनकी ज़िम्मेदारियाँ हैं। वह स्वयं के बचपन को छोटे भाई के लिए तिलांजलि देने से भी नहीं हिचकिचाते हैं। उन्हें इस बात का एहसास है कि उनके गलत कदम छोटे भाई के भविष्य को बिगाड़ सकते हैं । एक 14 साल के बच्चे द्वारा उठाया गया कदम छोटे भाई के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है, यही आदर्श बड़े भाई को छोटे भाई के सामने और भी ऊँचा बना देते हैं।

लेखक ने बड़े भाई साहब के माध्यम से शिक्षा पद्धति के उन दोषों का भी वर्णन किया है जो बच्चों को किताबी कीड़ा बनाते हैं और जीवन के व्यावहारिक ज्ञान से अलग रखते हैं। बड़े भाई साहब रटंत विद्या के कारण बुद्धि का विकास नहीं कर सके। एक अच्छी शिक्षा पद्धति में पढ़ाई के साथ खेलों का महत्त्व भी होना चाहिए। लेखक ने भी यह सिद्ध करना चाहा है कि बचपन में पढ़ाई के साथ खेलकूद भी आवश्यक है तभी स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास हो सकता है। साथ ही साथ कर्तव्य पालन और आदर्श स्थापित करने के लिए सामान्य जीवन की दिनचर्या को नहीं बदलना चाहिए।

कक्षा - दसवीं

विषय-हिंदी

बड़े भाई साहब (प्रेमचंद)

अधिगम प्राप्ति

- व्यक्तित्व के विकास के लिए पढ़ाई और खेलकूद दोनों की आवश्यकता।
- शिक्षा प्रणाली का व्यावहारिक होना ।
- अनुभव को जीवन जीने का आधार समझना।
- भ्रातृत्व प्रेम, एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव, धैर्य और कर्तव्यनिष्ठा जैसे नैतिक मूल्यों का विकास।
- अभिव्यक्ति हेतु भाषा को प्रभावी बनाने में लोकोक्तियों तथा मुहावरों की महत्ता।

दृश्य आरेखण (स्टोरी बोर्ड)

वर्तमान परिवेश में घर में भाइयों की नोंक-झोंक,

माँ का बीच में आकर समझाना व साहित्यकार प्रेमचंद की कहानी द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन करना

प्रेमचंद का जीवन परिचय

'बड़े भाई साहब' पाठ के माध्यम से शिक्षा प्रणाली के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना

बड़े भाई का अपना कर्तव्य निभाते हुए छोटे भाई को उपदेश देना

छोटे भाई का पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी रुचि दिखाना

अंत में दोनों भाइयों का यह समझ जाना कि व्यक्तित्व के विकास के लिए पढ़ाई के साथ खेलकूद भी आवश्यक

यह भी समझ लेना कि अनुभव से ही जीवन जीने की समझ आती है।

वर्तमान परिवेश में भी जीवन मूल्य को अपनाने की सीख लेना

अंततः घर में माँ और भाइयों की बातचीत के माध्यम से अधिगम प्राप्त करना

पात्र

पात्र- वर्तमान काल में

माँ

बड़ा भाई - 14 साल का

छोटा भाई 10 साल का

साहित्यकार प्रेमचंद की कहानी ‘ बड़े भाई साहब’ के पात्र

बड़े भाई साहब-14 साल

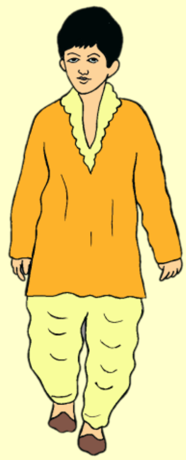

छोटा भाई -9 साल

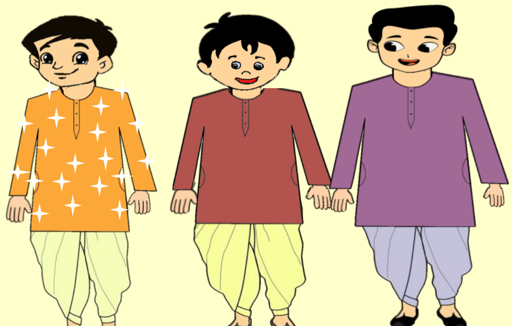

कुछ मित्र

चरित्रगत विशेषताएँ

वर्तमान परिवार का दृश्य

भाई ठीक ही तो कह रहा है ।
हाँ, तो पढ़ लिया ना ! सारा दिन पुस्तक खोल कर बैठा रहूँ क्या भैया की तरह ?

ठीक से बात करो।
हुँह!

अरे अरे ! लड़ो नहीं।
तो समझा दो न इसे।
आप भैया को समझाओ।

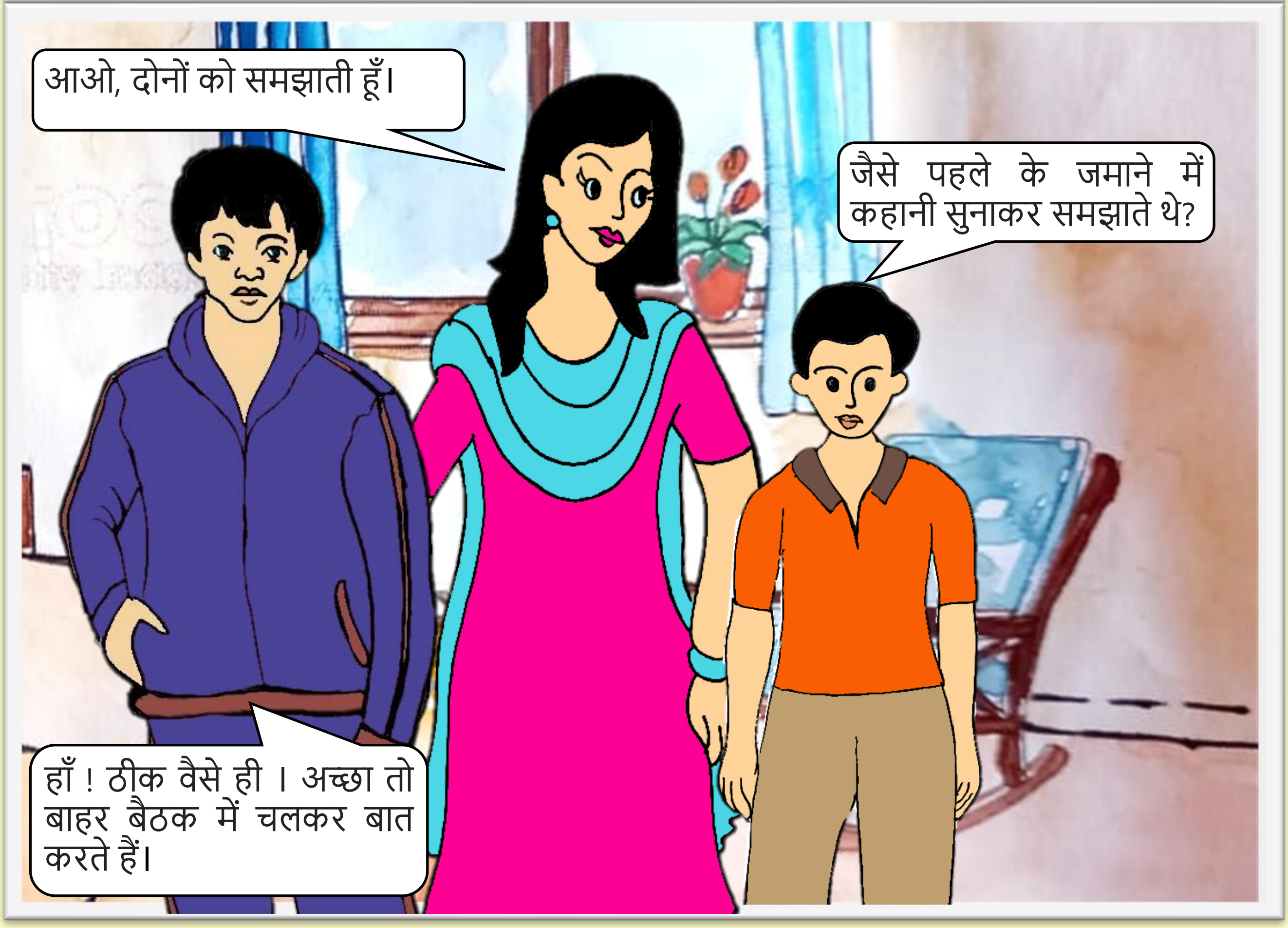
आओ, दोनों को समझाती हूँ।
जैसे पहले के जमाने में कहानी सुनाकर समझाते थे?
हाँ ! ठीक वैसे ही । अच्छा तो बाहर बैठक में चलकर बात करते हैं।

बैठक में माँ दोनों को प्यार से सोफे पर अपने पास बैठाकर समझाती हैं।

तीनों आकर बगीचे में बैठ जाते हैं।

इन्होंने कौन-कौन से उपन्यास लिखे हैं ?
इनके उपन्यास हैं -गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा ।
और इनकी पत्रिकाएँ हैं - हंस तथा माधुरी।
कई हिंदी फ़िल्में इनकी कहानियों पर आधारित हैं।
कौन-कौन सी?
शतरंज के खिलाड़ी, सद्‌गति, गोदान, गबन, हीरा - मोती।

'शतरंज के खिलाड़ी' तो आपने दिखाई थी, वही संजीव कुमार वाली ना?
हाँ,वही। बस! अब परिचय तो बहुत हो गया। चलो, कहानी शुरू करो ना!
ठीक है तो सुनो…
हिंदी फ़िल्म की तरह सुनाना।
ठीक है तो आँखें बंद करो और फ़िल्म की तरह इसे सोचो ।

गतिविधियाँ

- आपको अपने छोटे अथवा बड़े भाई बहन की कौन-सी बात अच्छी लगती है और क्यों ? कक्षा में चर्चा कीजिए ।

- खेलने से तन और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। इस विषय पर अध्यापक कक्षा में वाद - विवाद करवाएँ।

- विद्यार्थी चित्र के माध्यम से अपने मनपसंद कोई दो खेल बताएँ।

बड़े भाई साहब की बात को लेखक समझ नहीं पाता और बाहर खेल के मैदान में दोस्तों के साथ खेलने लग जाता है।

मित्रों के साथ खेलकर लेखक शाम को हॉस्टल में जब वापस आता है ।

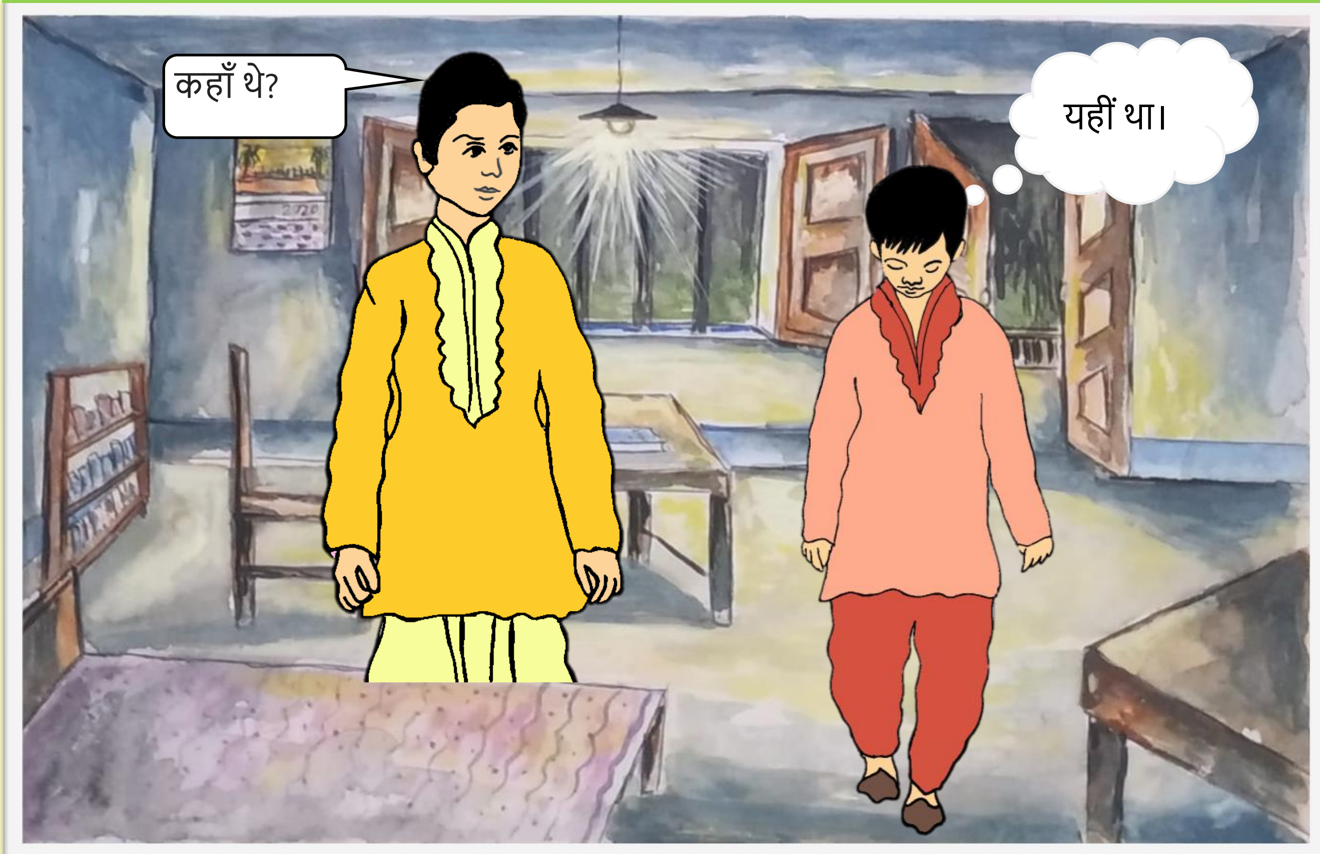

भाई साहब का उपदेश शुरू हो जाता है।

और मैं कहता हूँ तुम कितने **घोंघा हो** कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते।मैं कितनी मेहनत करता हूँ। यह तुम अपनी आँखों से देखते हो। अगर नहीं देखते तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है।
तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले -तमाशे होते हैं ,तुमने मुझे कभी जाते देखा? रोज़ क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता, हमेशा पढ़ता रहता हूँ।
उस पर एक-एक दरज़े में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ , फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि खेलकूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो या तीन साल लगते हैं।
तुम उम्र भर इसी दरज़े में पढ़ते रहोगे? अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है,तो बेहतर है , घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली- डंडा खेलो।दादा की **गाढ़ी कमाई** के रुपये क्यों बर्बाद करते हो?

1. कह तो ठीक रहे हैं, यह सब मुझे पता है पर क्या करूँ ?अपराध किया है तो डाँट तो सहनी पड़ेगी।
2. घर चला जाऊँ ? पढ़ा तो मुझसे जाता नहीं। मूर्ख ही रह लूँगा। नहीं-नहीं, पढ़ लूँगा ।
3.टाइम-टेबल बनाऊँगा। बिलकुल नहीं खेलूँगा ।
4.प्रातःकाल छः बजे उठूँगा। हाथ-मुँह धोकर नाश्ता करूँगा और फिर पढ़ने बैठ जाऊँगा।
5.छः से आठ तक अंग्रेज़ी,आठ से नौ तक हिसाब , नौ से साढ़े नौ तक इतिहास,फिर भोजन और स्कूल ।
6.साढ़े तीन बजे वापस आऊँगा। आधा घंटा आराम करूँगा।
7.चार से पाँच बजे तक भूगोल, पाँच से छः ग्रामर ।
8.आधा घंटा यहीं हॉस्टल के सामने टहल लूँगा। साढ़े छः से सात तक अंग्रेज़ी कंपोज़ीशन।
9.फिर भोजन , आठ से नौ तक अनुवाद , नौ से दस तक हिंदी।
10.दस से ग्यारह विविध विषय, फिर विश्राम। टाइम टेबल तो बन गया।
पर पहले दोस्तों के साथ खेलकर आता हूँ

लेखक मित्रों के साथ खेलने मैदान में आ जाता है।

मन ही मन डरता भी है पर खेलकूद नहीं छोड़ पाता था ।

कुछ समय पश्चात वार्षिक परीक्षा में अव्वल आने के बाद छोटा भाई गुल्ली डंडा खेलकर डरते हुए छात्रावास के कमरे में प्रवेश करता है और बड़े भाई के लिए सोचता है।

रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी राजा उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता भी उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी उसके दास थे। घमंड ने उसका **नामोनिशान तक मिटा** दिया, कोई उसे **चुल्लू भर पानी देने वाला न** बचा।
शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। अंत में उसे स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। इसी प्रकार शाहेरूम का भी अहंकार नष्ट किया गया।
तुमने तो केवल एक दरज़ा पास किया है और अभी से तुम्हारा **सिर फ़िर गया** तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, **अंधे के हाथ बटेर लग गई**। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है,बार-बार नहीं।

चूँकि लेखक को बड़े भाई की बातों का असर होना बंद हो चुका था। अतः भाई साहब अपनी तार्किक बुद्धि द्वारा लेखक को अनेक उदाहरणों से समझाने लगते हैं।

कह दिया 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार **पन्नों** से कम ना हो। जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार **पन्नों** में लिखने की क्या ज़रूरत?

उपदेश जारी रहता है।

संक्षेप में तो चार **पन्ने** हुए, नहीं तो शायद सौ-दो-सौ **पन्ने** लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी। है उलटी बात, है या नहीं?

इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फ़ेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज़्यादा अनुभव है ।जो कुछ कहता हूँ उसे **गिरह बाँधिए** ,नहीं तो पछताइएगा।अब चलिए, विद्यालय चलने का समय हो गया

विद्यालय जाने की तैयारी शुरू हो जाती है।

एक वर्ष के पश्चात वार्षिक परीक्षा में फिर अव्वल आने के बाद और बड़े भाई के फेल होने पर, छोटे भाई की खुशी आधी हो गई लेकिन एक कुटिल विचार भी उसके मन में आया।

और छोटा भाई मैदान में खेलने आ जाता है। इस तरह वह कुछ समय तक मनमानी करने लगता है ।

एक दिन मैदान में बड़े भाई साहब और लेखक की मुठभेड़ हो जाती है।

हॉस्टल पहुँचकर उनका उपदेश फिर शुरू हो जाता है।

समझ केवल किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्मा ने कोई दरज़ा नहीं पास किया और दादा जी भी पाँचवीं-छठी जमात से आगे नहीं गए... इनके पास दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुर्बा है। इन्हें हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा।
सही बात ही तो कह रहे हैं।
आठवें हेनरी के कितने ब्याह, आकाश में कितने नक्षत्र हैं ! उन्हें मालूम हो या ना हो ...लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है.
इनकी तार्किक शक्ति लाजवाब है।
दैव न करे आज मैं बीमार हो जाऊँ... तो तुम घबरा कर दादा को ही तार करोगे...है ना !
अब अगर दादा तुम्हारी जगह हो तो...वो बिना घबराये.. पहले खुद मरज़ पहचानकर इलाज करेंगे... और नहीं सफल हुए तो डॉक्टर को बुलाएँगे। समझ आया ?
जी

हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने भर कैसे खर्च चलाना है? सारे पैसे 20 और 22 तक खर्च करके पैसे-पैसे के मोहताज हो जाते हैं। जितना तुम और मैं खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा पूरे परिवार की देखभाल कर लेते थे। सुन रहे हो ना...
जी, समझ रहा हूँ।

जी
हमारे एम.ए. पास हेडमास्टर जी एक हज़ार रुपये पाने के बाद भी कर्ज़दार रहते थे। पर उनकी बूढ़ी माँ के पास डिग्री नहीं है पर जब से उन्होंने घर का इंतज़ाम देखा... मास्टर जी के यहाँ जैसे लक्ष्मी आ गई है। समझ आया....

अगर तुम यों न मानोगे तो मैं इसका (थप्पड़ दिखाते हुए) प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें **ज़हर लग रही हैं।**

लेखक को हताश देखकर भाई साहब ने विषय बदला ।
चलो ,थोड़ा टहल आएँ।

और दोनों भाई टहलते हुए मैदान में आ जाते हैं।

उसी समय कटी हुई पतंग दोनों भाइयों के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर लटक रही थी। भाई साहब भी छोटे भाई के साथ कनकौए की डोर थामे हुए हॉस्टल की ओर दौड़े ।

कहानी खत्म होने के बाद...
अब बताओ ! कैसी लगी कहानी ? इस कहानी से तुमने क्या सीखा ?
भैया, मुझे माफ़ कर दो। आप मेरे भले के लिए ही मुझे खेलने से रोक रहे थे ना !
माँ, यह तो जल्दी ही सीख गया ।
और तुमने क्या सीखा ?
पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी होने चाहिए तभी व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है। मैं सीख गया हूँ माँ।

और माँ, आपने क्या सीखा?
बताओ ना , माँ !
हमारी शिक्षा नीतियों में बदलाव ज़रूरी है। शिक्षा-प्रणाली रटंत होने की जगह व्यावहारिक होनी चाहिए जिससे बच्चे रुचि से पढ़ें।
चलो, अब अंदर चलते हैं । पापा के आने का समय हो गया और तुम्हारे पढ़ने का भी ।

बूझो तो जानें
वर्ग पहेली

क	छा	ज	उ	सी	ख	ह	क्षा	ब
त	त्रा	ड	ओ	व	म	ना	ण	व
च	वा	नौ	वीं	त	न	आ	ध	न
ज	स	ब	औ	ज	र	ऊ	घ	म
द	क	ऊ	ण	द	ट	श	ङ	ह
ग	र	ई	ध	क	था	ना	य	क
ब	ग	आ	घ	र	प	ब	तं	ली
प	ए	स	ङ	टं	ख	व	ग	र
र	प	ष	झ	त	फ	न	म	क
झ	तं	य़	ऱ	प	ध	म	व	म
व	ग	क	ख	ल	घ	ध्य	इ	अ
म	म	त	शि	क्षा	प्र	णा	ली	ध्य
क	व	द	उ	न	य	ऐ	भ	य
ग	न	ज	झ	च	ड	चा	ऊ	न
ल	अ	नु	भ	व	श	र	औ	शी
स	द	ग	अ	ड	ऱ	सौ	ञ	ल

बाएँ से दाएँ

1. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी में किसे महत्त्वपूर्ण कहा है ?
2. बड़े भाई साहब कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे ?
3. 'नसीहत' शब्द का पर्यायवाची शब्द लिखिए ।
4. बड़े भाई साहब ने किस पर व्यंग्य किया है?
5. किसकी रुचि खेलकूद, कंकरियाँ उछालने में थी ?

ऊपर से नीचे

1. लेखक और उसके बड़े भाई कहाँ रहते थे?
2. बड़े भाई स्वभाव से कैसे थे?
3. भाई साहब क्या उड़ाने में निपुण थे ?
4. बड़े भाई साहब के अनुसार शिक्षा-प्रणाली कैसी थी ?
5. प्रेमचंद जी ने लगभग कितनी कहानियाँ लिखी ?

उत्तर

बाएँ से दाएँ

1. अनुभव
2. नौवीं
3. सीख
4. शिक्षा-प्रणाली
5. कथा नायक

ऊपर से नीचे

1. छात्रावास
2. अध्ययनशील
3. पतंग
4. रटंत
5. चार सौ

प्रश्नावली

प्रश्न 1-माँ ने बच्चों को कहानी कहाँ सुनाई?
A)बगीचे में
B) बैठक में
C)रसोईघर में
D)शयन कक्ष में

प्रश्न 2- बच्चों ने प्रेमचंद की कहानी पर आधारित कौन-सी फ़िल्म देखी हुई थी?
A)सद्गति
B) गोदान
C)शतरंज के खिलाड़ी
D)हीरा-मोती

प्रश्न 3- भाई साहब लेखक से कितनी कक्षा आगे थे ?
A) दो कक्षा
B) तीन कक्षा
C) चार कक्षा
D) सात कक्षा

प्रश्न 4-बड़े भाई साहब कहानी किस शैली में लिखी गई है?
A) व्यंग्यात्मक
B) करुणामयी
C) आत्म कथात्मक
D) सभी

प्रश्न 5- लेखक के भाई साहब उससे कितने साल बड़े थे ?
A) 3 साल
B) 5 साल
C) 6 साल
D) 8 साल

प्रश्न 6- अवसर मिलते ही लेखक कौन-से काम करता था ?
A) चारदीवारी पर चढ़ता उतरता था
B) कागज़ की तितलियाँ उड़ाता था
C) कंकर उछालता था
D) सभी

प्रश्न 7- लेखक का मन किस काम में नहीं लगता था ?
A) पढ़ने में
B) खेलने में
C) दोस्तों के साथ कंचे खेलने में
D) सभी

प्रश्न 8- भाई साहब किस कला में निपुण थे ?
A) खेलों में
B) पढ़ने में
C) कंचे खेलने में
D) उपदेश देने की कला में

प्रश्न 9- किस बात पर लेखक के दिल के टुकड़े हो जाते थे ?
A) पतंग कटने से
B) खेल में हार जाने से
C) फेल होने होने से
D) भाई साहब के उपदेश सुनने से

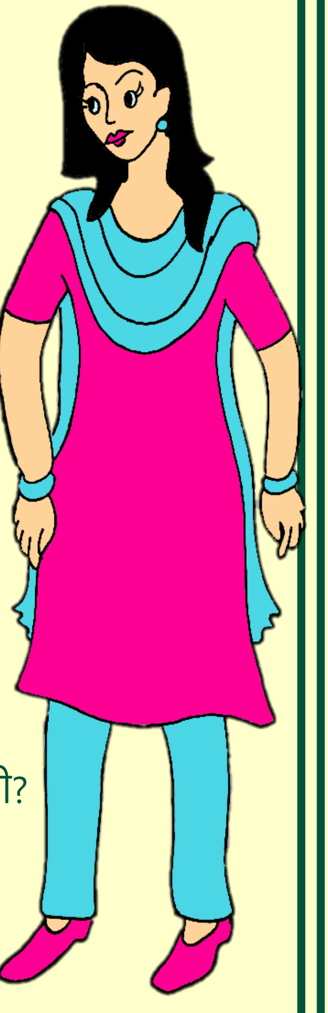

प्रश्न 10- लेखक को भाई साहब की बातें अच्छी क्यों नहीं लगती थी?
A) क्योंकि लेखक अव्वल दरज़े में पास हुआ था
B) भाई साहब फेल हो गए थे
C) भाई साहब उपदेश देते थे
D) सभी

प्रश्न 11- लेखक को कौन-सा नया शौक पैदा हो गया था ?
A) कंचे खेलने का
B) किताबें पढ़ने का
C) पतंग उड़ाने का
D) सभी

प्रश्न 12- बड़े भाई साहब के अनुसार कैसी बुद्धि व्यर्थ है ?
A) जो आत्मगौरव को मार डाले
B) पढ़ाई न करने दे
C) जो खेलकूद में लगी रहे
D) सभी

प्रश्न 13- लेखक की अपने बारे में क्या धारणा बन गई थी ?
A) वह बिना पढ़े भी प्रथम आएगा
B) कि वह फेल हो जाएगा
C) कि वह नहीं पढ़ सकता
D) कोई नहीं

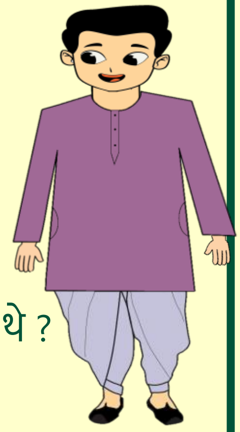

प्रश्न 14- बड़े भाई छोटे भाई से हर समय सबसे पहले क्या सवाल पूछते थे ?
A) कहाँ थे
B) क्या कर रहे थे
C) कहाँ जा रहे हो
D) पढ़ाई कर ली

प्रश्न 15- बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे ?
A) कॉपी और किताब के हाशियों पर कुत्तों और बिल्लियों की तस्वीर बनाते थे
B) एक ही शब्द को बार-बार लिखते थे
C) बिना अर्थ के शब्द लिखते थे
D) सभी

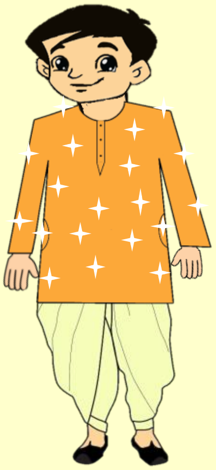

प्रश्न 16- बड़े भाई में क्या गुण थे ?
A) गंभीर प्रवृत्ति के थे
B) छोटे भाई के हितैषी थे
C) वाक् कला में निपुण थे
D) सभी

प्रश्न 17- बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?
A) अनुभव से
B) धक्के खाकर
C) पढ़ने से
D) सभी

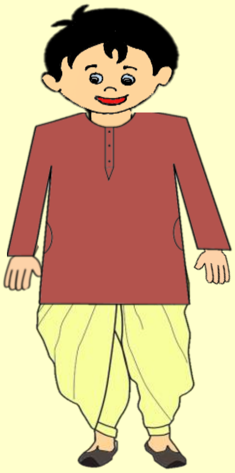

प्रश्न 18- कहानी 'बड़े भाई साहब' से माँ ने क्या सीखा ?
A) शिक्षा नीतियों में बदलाव ज़रूरी है।
B) शिक्षा नीति में कोई बदलाव नहीं होना चाहिए।
C) बच्चों को रटंत शिक्षा-प्रणाली का पालन करना चाहिए।
D) शिक्षा-प्रणाली व्यावहारिक नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न संख्या	उत्तर	प्रश्न संख्या	उत्तर
1	A	10	D
2	C	11	C
3	B	12	D
4	C	13	A
5	B	14	A
6	D	15	D
7	A	16	D
8	D	17	A
9	D	18	A

शब्दावली

दरज़ा - कक्षा

गाढ़ी कमाई - मेहनत की कमाई

चेष्टा - कोशिश

दबे पाँव - बिना आवाज़ के

विपत्ति - मुसीबत

फटकार - डाँट

घुड़कियाँ - गुस्से से भरी बातें सुनना

तिरस्कार – अपमान

रौब - डर

शरीक - शामिल

हेकड़ी - घमंड

ज़ाहिर - स्पष्ट

आंतक – भय

चरित्र - व्यवहार

महज़ - सिर्फ़

भूमण्डल - पूरी धरती

स्वाधीन - स्वतंत्र

ग्रंथ-सूची

- कक्षा दसवीं पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2
  एन.सी.ई.आर.टी.

आई.टी. उपकरण

- एम .एस. पावर प्वाइंट
- अभिव्यक्ति संपादक
- ऑटोडेस्क स्केचबुक संस्करण 8.7.1
- माइक्रोसॉफ्ट पेंट

अभिस्वीकृति

“रचनात्मकता के बिना परिवर्तन असंभव है और परिवर्तन के बिना प्रगति संभव नहीं ।”

इसी बात की सार्थकता सिद्ध करने के लिए किसी ने सच ही कहा है, **“आवश्यकता आविष्कार की जननी है**।” नई शिक्षा-प्रणाली के साथ-साथ पाठ्यक्रम को नया रूप देने के लिए जिस तरीके से कल्पनाशीलता का प्रयोग करते हुए ग्राफिक उपन्यास बनाने का प्रयास किया गया है वह रचनात्मकता का अद्वितीय उदाहरण है । ग्राफिक नॉवेल के लिए विद्यालय में संगठन बनाए गए। अभिविन्यास सत्र के द्वारा अध्यापकवर्ग की शंकाओं का निवारण किया गया। विषय चुने गए, पात्रों का चयन, विचारों का आदान-प्रदान हुआ और फिर संगठन शक्ति का प्रदर्शन हुआ । भाषा, कला, कंप्यूटर विभाग, एकजुट होकर एक-दूसरे का सहयोग करने लगे। यह एक समय-निवेशक कार्य था लेकिन आदर्श नेतृत्व में किया गया चुनौतीपूर्ण कार्य, आत्मविश्वास और ऊर्जा से भरपूर था। संगठन के सदस्यों द्वारा इस बात पर पूर्ण ध्यान केंद्रित किया गया कि इस चित्रमय प्रस्तुति में कहानी की मौलिकता तथा विद्यार्थियों की रोचकता बनी रहे व अधिगम पूर्णत: प्राप्त हो सकें। हमें पूर्ण विश्वास है कि पाठक इसे अवश्य पसंद करेंगे।

निदेशक प्राचार्या का संदेश

इस ग्राफिक उपन्यास का निर्माण हम सभी के लिए एक अनूठा अनुभव रहा है। यह एक अर्थ में, 21 वीं शताब्दी के चार मुख्य **' स '** कौशलों को शामिल करता है:

सृजनात्मकता - हम सबने अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए इन ग्राफिक उपन्यासों का निर्माण किया है।

सहयोग - सभी विभाग एक टीम के रूप में काम करने के लिए एक साथ आए।

सोच-विचार- महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर गहन सोच-विचार करने के लिए सब एक साथ जुट गए तथा कई मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया जिससे **पाठ्यक्रम** सर्वोत्तम तरीके से हमारे शिक्षार्थियों तक पहुँच सके।

संचार- अपने पाठकों के लिए हम सीखने के प्रतिफल को संचार के माध्यम से अधिक महत्त्वपूर्ण तरीके से संप्रेषित कर पाए।

मुझे लगता है कि ग्राफिक उपन्यास जटिल मॉड्यूल को तोड़ने और उन्हें एक कहानी के माध्यम से समझाने का एक शानदार तरीका है।

इस सामग्री को बनाने के लिए तथा टीमों को प्रोत्साहित करने के लिए सुश्री अनीता करवाल और श्री मनोज आहूजा को मेरा हार्दिक आभार।

श्री संदीप सेठी का आभार, जिन्होंने इस उपन्यास के लिए प्रशिक्षण देने में पूर्ण धैर्य दिखाया, नहीं तो, इस उपन्यास को सही दिशा न मिल पाती।

अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए शिक्षकों द्वारा की गई जी-तोड़ मेहनत भी प्रशंसनीय है।

अदिति मिश्रा

निदेशक प्राचार्या

दिल्ली पब्लिक स्कूल

सेक्टर-45, गुड़गाँव

‘बड़े भाई साहब’ कहानी प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद द्वारा रचित है । इस कहानी को आज के युग से जोड़ने के लिए एक आधुनिक परिवार का सहारा लिया गया है। माँ तथा दोनों बच्चों की बातचीत के द्वारा पाठ ‘बड़े भाई साहब‘ में निहित संदेश आज के विद्यार्थीवर्ग तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

प्रेमचंद की इस कहानी में बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण किया है । लेखक ने भी यह सिद्ध करना चाहा है कि बचपन में पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद भी आवश्यक है तभी स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास हो सकता है।

DELHI PUBLIC SCHOOL – GURGAON

(Affiliated to C.B.S.E)

Site No. 1, Sector-45, Urban Estate, Gurugram-122003

www.dpsgurgaon.org